अध्याय 14

विश्वास का त्याग (भाग 2): इस्राएल का बलवा और परिणाम

दस भेदियों ने घोषणा की थी कि इस्राएलियों के पास कनान के लोगों के विरुद्ध में जाने का कोई तरीका नहीं था (13:31)। परिस्थिति के बारे में इस बुरे विचार से गम्भीर प्रभाव पड़ा। गिनती 14 दस भेदियों की नकारात्मक सोच के लिए इस्राएल की पापमय प्रतिक्रिया का विवरण देता है। लोगों ने अपनी कुछ बातों के विनाश पर शोक किया और यहाँ तक कि मिस्र लौट जाने की इच्छा भी दिखाई। यहोशू और कालिब ने भीड़ को मनाने का प्रयास किया, परमेश्वर की सहायता से वे देश को अपना कर सकते हैं।

क्यों इस समय तक यहोशू ने कालिब के विचार को बताने के बारे में इतना समय लिया, इसकी कोई जानकारी नहीं है। यह अनुमान लगाया जाता है कि वह पहले चुप रहा क्योंकि वह मूसा का बहुत प्रिय था और इसलिए उसके विचार पर लोगों का ध्यान नहीं जाएगा। यहोशू और कालिब के सकारात्मक दृष्टिकोण से प्रोत्साहित होने के बजाय, भीड़ ने उनपर पथराव करने की धमकी दी।

परमेश्वर ने यह कहते हुए अपने अत्यन्त क्रोध को प्रगट किया कि वह पूरी तरह से लोगों को नष्ट कर देगा और मूसा से एक बड़ी जाति बनाएगा। मूसा ने परमेश्वर से मनाया कि लोगों को नाश करने के अपने क्रोध को शान्त करे। परन्तु, परमेश्वर ने घोषणा की कि वह बीस से अधिक उम्र वालों (यहोशू और कालिब को छोड़कर) को प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने की अनुमति न देकर उन्हें गम्भीर रूप से दण्ड देगा। लोग चालीस वर्षों तक जंगल में भटकते रहेंगे, जब तक कि उनकी पीढ़ी बीत न जाए; उसके बाद वह उनके बच्चों को - जो कि नई पीढ़ी होगी - उस देश में पहुँचाएगा। इसके बाद, परमेश्वर ने दस भेदियों को मार डाला जिन्होंने बुरे सन्देश दिए थे।

जब लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा को सुना, तो उन्होंने “बहुत विलाप किया” (14:39)। इस बिंदु पर, स्पष्ट रूप से अपने पाप के लिए प्रायश्चित करने के प्रयास में, उन्होंने ऊपर जाने और देश पर जय पाने का निर्णय किया। मूसा ने उन्हें ऐसा करने के विरुद्ध चेतावनी दी, क्योंकि ऐसा करने से वे परमेश्वर की आज्ञा का “उल्लंघन” करते (14:41)। वे अपनी योजना के साथ आगे बढ़े और कनान पर जय पाने का प्रयास किए, जबकि मूसा और परमेश्वर का सन्दूक तम्बू में थे। इस्राएली

बुरी तरह से पराजित हुए (14:45)।

भेदियों के संदेश पर लोगों की प्रतिक्रिया (14:1-5)

[1]तब सारी मण्डली चिल्ला उठी; और रात भर वे लोग रोते ही रहे। [2]और सब इस्राएली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगे; और सारी मण्डली उनसे कहने लगी, "भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते! या इस जंगल ही में मर जाते! [3]यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? हमारी स्त्रियाँ और बाल-बच्चे तो लूट में चले जाएँगे; क्या हमारे लिए अच्छा नहीं कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ?" [4]फिर वे आपस में कहने लगे, "आओ, हम किसी को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को लौट चलें।" [5]तब मूसा और हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली के सामने मुँह के बल गिरे।

आयत 1. जब **सारी मण्डली** ने सुना कि कनान देश के लोग डील-डौल में "नपीलों" के समान थे और भेदियों ने स्वयं को उनके सामने "टिड्डे के समान" बताया (13:33), तो वे **लोग रोते ही रहे।**

आयतें 2-4. तब **सब इस्राएली** ने इच्छा की कि इस देश पर जय पाने के प्रयास में नाश होने से भला होता कि वे **मिस्र देश में** या **जंगल ही में मर जाते**। उन्होंने परमेश्वर पर **देश में** [उन्हें] **ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है** का आरोप लगाया; उन्होंने विलाप किया कि उनकी **स्त्रियाँ और बाल-बच्चे तो लूट में चले जाएँगे**; और उन्होंने कहा कि कनान पर जय पाने का प्रयत्न करने से अच्छा है कि मिस्र को लौट जाएँ। वे परमेश्वर के लिए विश्वासयोग्यता से लड़ने की तुलना में दास बनकर रहना चाहते थे। एक नया **प्रधान** चुनने के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया गया था जो उन्हें वापस मिस्र ले जाता।

आयत 5. लोगों की बातों को सुनने के बाद, मूसा **और हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली के सामने मुँह के बल गिरे**। इस्राएल के अगुवों के स्वयं का नाश होने का क्या कारण था? लोगों ने उन बातों के लिए धन्यवाद नहीं दिया, जो परमेश्वर ने उनके लिए किया था उसे भूल गए। वे भी परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करने में असफल रहे थे। इस्राएलियों को यह महसूस करना चाहिए था कि लाल सागर को दो भागों में बाँटने वाला परमेश्वर कनान पर जय भी दिला सकता है। इसके बदले, लोगों ने परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के विरोध बोलते हुए निन्दा की थी। उन्होंने उस पर आरोप लगाया था कि वह उन्हें हानि पहुँचाना चाहता था, उन्हें जंगल में मरने के लिए लेकर आया और चाहता था कि उनकी पत्नियाँ और बच्चे मारे जाएँ! परमेश्वर ने कहा कि लोगों ने उसका "अपमान किया" (נָאַץ, *नाआट्स)* (14:23; देखें 14:11) था। दो अन्य अनुवाद में "अपमान किया" के स्थान पर "मुझे तुच्छ जाना" और "मुझसे अपमानजनक व्यवहार किया गया" लिखा गया है। कैथरीन डूब सकेनफेल्ड ने इस शब्द के वजन की ओर इशारा किया:

क्रिया का उपयोग पुराने नियम में केवल तब किया गया है जब लोग परमेश्वर का अपमान करते हैं या परमेश्वर के लिए कुछ पवित्र किया जाता है। इस प्रकार "तुच्छ जानना" एक अत्यधिक आरोप लगाने वाला धार्मिक शब्द है, और वास्तव में लोगों की प्रतिक्रिया परमेश्वर के साथ अपने पूरे वाचा सम्बन्धों को अस्वीकार करना है। जंगल के संदर्भ में, देश का अस्वीकार करना अपने आप में वाचा को अस्वीकार करने का प्रतीक है। मिस्र से प्रस्थान करने के समय से लोगों के साथ परमेश्वर के रिश्ते का लक्ष्य उन्हें उनके पूर्वजों से प्रतिज्ञा किए गए देश में ले जाना है (उत्पत्ति 12:7)। ... एक इब्रानी परिप्रेक्ष्य से हटना, "एक घोर" पाप करना है। यह जानबूझकर किया गया कार्य है, अनजाने में किया पाप नहीं जिसके लिए पश्चाताप किया जा सकता है; ऐसे जानबूझकर किए गए पाप अनिवार्य रूप से नकारात्मक परिणाम देते हैं।[1]

मूसा और हारून इस्राएल के अपराध की बहुतायत से डर गए थे। वास्तविकता यह है कि वे "सारी मण्डली के सामने" स्वयं मुँह के बल गिरे, जो "उनके पाप और खतरे में स्वयं को पहचानने" का एक तरीका हो सकता है।[2]

यहोशू और कालिब का उत्तर (14:6-10)

6और नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब, जो देश के भेद लेनेवालों में से थे, अपने वस्त्र फाड़कर, 7इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे, "जिस देश का भेद लेने को हम इधर उधर घूम कर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है। 8यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाकर उसे हमें दे देगा। 9केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो; और न उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो।" 10तब सारी मण्डली चिल्ला उठी कि इन पर पथराव करो। ...

आयतें 6-8. यहोशू और **कालिब** ने मण्डली के विवादास्पद शब्दों के उत्तर में, **अपने वस्त्र फाड़** (शोक या घोर संकट का संकेत) दिए और उनसे पुनर्विचार करने के लिए अनुरोध किया। पहले, केवल कालिब को अन्य भेदियों के सन्देश का विरोध करते हुए वर्णित किया गया था; इस दृश्य में यहोशू लोगों को भेदियों के बहुमत नकारात्मक दृष्टिकोण को अस्वीकार करने के लिए सहमत होने में शामिल हो गया।

इन विश्वासयोग्य भेदियों ने पुष्टि की कि वह देश एक **अत्यन्त उत्तम देश** था। उन्होंने आश्वासन दिया कि, **यदि यहोवा** अपने लोगों से **प्रसन्न** था, तो वह उन्हें उस देश में, **जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाकर** [उन्हें] **उसे दे देगा।**

आयत 9. यहोशू और कालिब ने इस्राएल से आग्रह किया कि वे **यहोवा के विरुद्ध बलवा** न करें। दोनों ने पुष्टि की, "**यहोवा हमारे संग है।**" देश के लोगों के लिए, यहोशू और कालिब ने कहा कि इस्राएल उनसे **न डरो**, क्योंकि **उस देश के लोगों** की **सुरक्षा उनके ऊपर से हट गई** थी। शब्द (*צֵל, ट्सेल)* का अनुवाद "सुरक्षा"

किया गया है जिसका अर्थ है “छाया” या “कवच”। छाया किसी क्षेत्र के रेगिस्तान की तपती भूमि में सूर्य से सुरक्षा प्रदान करती थी।[3] यहाँ शब्द का प्रयोग एक रूपक के रूप से किया गया है; परमेश्वर ने शत्रुओं की सुरक्षा उन पर से हटा दी थी, उन्हें कमजोर बना दिया कि उसका चुना हुआ राष्ट्र उनपर जय प्राप्त करे।

यहोशू और कालिब के संदेश दो प्रकार के थे। (1) परमेश्वर उनके साथ होने से इस्राएल उस देश को अपना कर सकते थे। दोनों पुरुषों ने लोगों से आग्रह किया कि वे परमेश्वर के विरूद्ध बलवा न करें क्योंकि “जीत परमेश्वर पर निर्भर करती है, विपक्ष की शक्ति पर नहीं।”[4] लोगों का डील-डौल और उनकी बहुतायत, उनके किलों की ताकत, और उनके हथियारों की उपलब्धता सब व्यर्थ थे। (2) उस देश में प्रवेश करने से इनकार करना परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करना होगा।

आयत 10. मण्डली सलाह से सहमत नहीं थी। इसके बदले, **सारी मण्डली** ने यहोशू और कालिब को **पथराव** करने की धमकी दी (देखें निर्गमन 17:4)।

यहोवा का भय और मूसा की मध्यस्थता (14:10-19)

10… तब यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू में सब इस्राएलियों पर प्रकाशमान हुआ। 11तब यहोवा ने मूसा से कहा, “वे लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे? 12मैं उन्हें मरी से मारूँगा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूँगा, और तुझ से एक जाति उत्पन्न करूँगा जो उनसे बड़ी और बलवन्त होगी।” 13मूसा ने यहोवा से कहा, “तब तो मिस्री जिनके मध्य में से तू अपनी सामर्थ्य दिखाकर उन लोगों को निकाल ले आया है यह सुनेंगे, 14और इस देश के निवासियों से कहेंगे। उन्होंने तो यह सुना है कि तू जो यहोवा है, इन लोगों के मध्य में रहता है; और प्रत्यक्ष दिखाई देता है, और तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और तू दिन को बादल के खम्भे में, और रात को अग्नि के खम्भे में होकर इनके आगे आगे चला करता है। 15इसलिए यदि तू इन लोगों को एक ही बार में मार डाले, तो जिन जातियों ने तेरी कीर्ति सुनी है वे कहेंगी, 16कि यहोवा उन लोगों को उस देश में जिसे उसने उन्हें देने की शपथ खाई थी पहुँचा न सका, इस कारण उसने उन्हें जंगल में घात कर डाला है। 17इसलिए अब प्रभु की सामर्थ्य की महिमा तेरे इस कहने के अनुसार हो, 18कि यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है। 19अब इन लोगों के अधर्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे।”

आयत 10. इससे पहले कि लोग दो वफादार भेदियों को पथराव करें, परमेश्वर ने कार्य में रुकावट डाली **यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू में सब इस्राएलियों पर प्रकाशमान हुआ**। हम केवल मण्डली के चेहरों में डर की कल्पना कर सकते हैं

क्योंकि वे जान गए कि परमेश्वर स्वयं गड़बड़ी में शामिल थे!

आयतें 11, 12. जब **यहोवा ने मूसा से** बात की, तो शायद उसने मूसा को तम्बू में बुलाया और वहाँ उससे बात की, जबकि मण्डली यह सुनने की प्रतीक्षा कर रही थी कि परमेश्वर क्या कहना चाहता था। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपनी अप्रसन्नता व्यक्त की: **"वे लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे?"** उसने उनकी असफलता पर दोष लगाया **सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी** जो उसने किए थे **विश्वास न करें**। उन "चिह्नों" में मिस्र में दस विपत्तियाँ, लाल सागर के माध्यम से इस्राएल का छुटकारा, और जंगल में भोजनवस्तु और जल की पूर्ति करने जैसे परमेश्वर के आश्चर्यकर्म शामिल थे। परमेश्वर ने राष्ट्र का विनाश करने की और मूसा से **एक जाति उत्पन्न** करने **जो उनसे बड़ी और बलवन्त होगी** की चेतावनी दी। मिस्र से प्रस्थान के बाद से, यह दूसरी बार था जब परमेश्वर ने मूसा के साथ शुरुआत करने का सुझाव दिया था (निर्गमन 32:10)। मूसा के श्रेय के लिए, उसने परमेश्वर के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया, परन्तु परमेश्वर को मनाने का प्रयास किया कि **उन्हें मरी से मारूँगा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूँगा** की अपनी चेतावनी को भूल जाए।

आयतें 13, 14. बारुख ए. लेविन ने हमें स्मरण दिलाया है कि "एक भविष्यद्वक्ता अगुवा के रूप में, मूसा इस्राएल के लिए पूरी तरह से विश्वासयोग्य था, और उसका मुख्य प्रयास था कि वह परमेश्वर को अपने पापमय लोगों को क्षमा करने और उनके लिए अपनी अच्छी योजना बनाने के लिए मनाए।"[5] मूसा ने अपने निवेदन का आधार, सबसे पहले, यह रखा कि दूसरे राष्ट्र के लोग परमेश्वर के बारे में - उसके सम्मान के - और दूसरा, परमेश्वर के दयालु स्वभाव के विषय में क्या सोचते थे।

मूसा ने यह कहते हुए शुरूवात की कि, यदि परमेश्वर ने अपने लोगों का विनाश किया, तो **मिस्र** के लोग **यह सुनेंगे** और अन्य राष्ट्रों को बताएँगे कि यहोवा अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में असमर्थ था। उस देश **के निवासियों** को मालूम था कि इस्राएलियों के साथ परमेश्वर का घनिष्ठ सम्बन्ध था; वे जानते थे कि वह **दिन को बादल के खम्भे में, और रात को अग्नि के खम्भे में होकर इनके आगे आगे चला करता** था।

आयतें 15, 16. यदि परमेश्वर इस्राएल को **मार डाले**, तो अन्य देशों के लोग समझेंगे कि वह उन लोगों को **उस देश में जिसे उसने उन्हें देने की शपथ खाई थी पहुँचाने** के योग्य न था, और इस कारण **उसने उन्हें जंगल में घात कर डाला**।

आयतें 17-19. मूसा की दूसरी अपील इस बात पर आधारित थी कि कैसे परमेश्वर ने स्वयं **कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय होने** की घोषणा की थी। "कोप करने में धीरजवन्त" एक इब्रानी मुहावरे (אֶרֶךְ אַפַּיִם, *'एरेक 'अप्पायिम)* का अनुवाद करता है जिसका शाब्दिक अर्थ है "नाक लंबा होना।" यह अवलोकन पर आधारित है कि जब कोई व्यक्ति क्रोधित हो जाता है तो उसका नाक अकसर बहने लगते हैं। חֶסֶד *(हेसेद)* शब्द का अनुवाद "अति करुणामय" किया गया है, जिसे "वाचा प्रेम" या "विश्वास प्रेम" के रूप में परिभाषित किया गया है। आयत

19 में इसका अनुवाद "दया," "महान और स्थायी प्रेम," "दृढ़ प्रेम," और "महान प्रेम" के रूप में किया गया है। निर्गमन 32 में इस्राएल के पाप के बाद मूसा के शब्दों ने स्वयं परमेश्वर के प्रगट होने को दोहराया (निर्गमन 34:6, 7; देखें निर्गमन 20:5, 6)।

यह जानकर कि यहोवा **अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला** है, मूसा ने उससे विनती की, **"अब इन लोगों के अधर्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे।"** मूसा स्पष्ट है कि लोगों को क्षमा करके परमेश्वर को उसकी महानता का प्रदर्शन करने के लिए कह रहा था।

यहोवा का निर्णय (14:20-38)

**[20]यहोवा ने कहा, "तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूँ; [21]परन्तु मेरे
जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी;
[22]उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे
किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें
नहीं मानीं, [23]इसलिए जिस देश के विषय मैं ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको
वे कभी देखने न पाएँगे; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उनमें से कोई भी
उसे देखने न पाएगा। [24]परन्तु इस कारण कि मेरे दास कालिब के साथ और ही
आत्मा है, और उसने पूरी रीति से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में
जिसमें वह हो आया है पहुँचाऊँगा, और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा।
[25]अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं, इसलिए कल तुम घूमकर प्रस्थान
करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ।" [26]फिर यहोवा ने मूसा और
हारून से कहा, [27]"यह बुरी मण्डली मुझ पर बुड़बुड़ाती रहती है, उसको मैं कब
तक सहता रहूँ? इस्राएली जो मुझ पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, उनका यह बुड़बुड़ाना मैं
ने सुना है। [28]इसलिए उनसे कह कि यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की
शपथ जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही हैं, नि:सन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ
व्यवहार करूँगा। [29]तुम्हारे शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे; और तुम सब में से बीस
वर्ष के या उससे अधिक आयु के जितने गिने गए थे, और मुझ पर बुड़बुड़ाते थे,
[30]उनमें से यपुन्ने के पुत्र कालिब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश
में न जाने पाएगा, जिसके विषय मैं ने शपथ खाई है कि तुम को उसमें बसाऊँगा।
[31]परन्तु तुम्हारे बाल-बच्चे जिनके विषय तुम ने कहा है, कि वे लूट में चले जाएँगे,
उनको मैं उस देश में पहुँचा दूँगा; और वे उस देश को जान लेंगे जिस को तुम ने
तुच्छ जाना है। [32]परन्तु तुम लोगों के शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे। [33]और जब तक
तुम्हारे शव जंगल में न गल जाएँ तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक, तुम्हारे बाल-
बच्चे जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे। [34]जितने
दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे, अर्थात् चालीस दिन, उनकी गिनती के अनुसार,
दिन पीछे एक वर्ष, अर्थात् चालीस वर्ष तक तुम अपने अधर्म का दण्ड उठाए रहोगे,**

तब तुम जान लोगे कि मेरा विरोध क्या है। [35]मैं यहोवा यह कह चुका हूँ कि इस बुरी मण्डली के लोग जो मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं इसी जंगल में मर मिटेंगे; और नि:सन्देह मैं ऐसा ही करूँगा भी।" [36]तब जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश का भेद लेने के लिए भेजा था, और उन्होंने लौटकर उस देश की नामधराई करके सारी मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिए उभारा था, [37]उस देश की वे नामधराई करनेवाले पुरुष यहोवा के मारने से उसके सामने मर गये। [38]परन्तु देश का भेद लेनेवाले पुरुषों में से नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब दोनों जीवित रहे।

परमेश्वर ने तीन किस्तों में अपना निर्णय सुनाया। पहले दो संदेश इस्राएल के अगुवों के लिए थे; तीसरा उन लोगों के प्रति परमेश्वर के क्रोध का प्रदर्शन था जो दोषी थे।

आयत 20. उसकी घोषणा के पहले भाग में, परमेश्वर ने मूसा से बात की। वह अनुग्रह के कारण मूसा के अनुरोध पर सहमत हो गया: **"तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूँ।"** परमेश्वर का क्षमा करना उसकी दयालु, अनुग्रही प्रकृति को दर्शाता है। यह परमेश्वर के साथ मूसा के रिश्ते की निकटता दिखाता है, जिसमें परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य दास से आश्वस्त होने की इच्छा रखता था। यह घटना मध्यस्थता की प्रार्थना की शक्ति को दर्शाती है।

परमेश्वर लोगों को कैसे "क्षमा" कर सकता था और फिर उन्हें जंगल में मरने के लिए दण्ड दे सकता है? परमेश्वर के क्षमा करने का अर्थ था कि वह वैसा नहीं करेगा जैसा करने की उसने चेतावनी दी थी - "उन्हें मरी से मारूँगा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूँगा" (14:12)। दूसरे शब्दों में, वह पूरी तरह से उस राष्ट्र का विनाश नहीं करेगा। सकेनफेल्ड ने यह विचार व्यक्त किया:

> ... यहाँ परमेश्वर की क्षमा का तात्पर्य *लोगों* का विनाश नहीं किया जाना है, *समुदाय* के लिए परमेश्वर से सम्बन्ध की निरन्तरता परमेश्वर के समुदाय के रूप में होती थी। यह *हेसेद* [अति करुणामय] पर आधारित निर्णय है, मूसा या किसी और से नया राष्ट्र का निर्माण करने की नहीं, और उनके अविश्वास के कारण इस समुदाय को अलग करने की नहीं।[6]

इसके बदले, उसने उस अविश्वास की पीढ़ी के लोगों को दण्डित करके उनका विनाश किया परन्तु उनके बच्चों को बचाया और उन्हें प्रतिज्ञा के देश में लेकर आया।

आयतें 21-23. सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी, यह कहने के बाद परमेश्वर ने अपना निर्णय कह सुनाया: **"इसलिए जिस देश के विषय मैं ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएँगे; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उनमें से कोई भी उसे देखने न पाएगा।"** इन बातों ने **दस बार उसकी परीक्षा की**, और **उसकी बातें नहीं मानीं।** जॉर्ज बुकानन ग्रे ने कहा "दस बार" अभिव्यक्ति का उपयोग उस तरह से किया गया है जैसे हम "दर्जन बार" या "बार-बार" कहते हैं, यद्यपि उसने देखा कि तलमूद अभिव्यक्ति को वास्तविक रूप

से लेता है और दस पापों को सूचीबद्ध करता है।[7]

आयत 24. कालिब को इस दण्ड से मुक्त किया गया था: वह उस देश में प्रवेश करने पाएगा और **उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा** क्योंकि परमेश्वर ने उसके भीतर एक **और ही आत्मा** को देखा था। कालिब ने **पूरी रीति से उसका अनुकरण किया** था।[8]

आयत 25. अन्त में, परमेश्वर ने कहा कि अगले दिन लोगों को **लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में** जाना था। इस आयत का पहले भाग को कई तरीके से समझा गया है। एक अन्य संस्करण में वाक्यांश **अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं**, स्वतंत्र है; इसके पहले क्या हुआ और इसके बाद क्या हुआ वह अस्पष्ट है। एक अन्य संस्करण इस वाक्यांश के सामने "क्योंकि" का उपयोग करता है, जो यह बताता है कि उस देश पर आक्रमण करने की कथित कठिनाई के कारण - जैसा अमालेकी और कनानी लोगों द्वारा दर्शाया गया था - इस्राएली लोगों को जंगल में वापस जाना था। ए. नोर्टसिज ने सुझाव दिया कि इस वाक्यांश को उसके साथ जोड़ा जाना चाहिए जो इसके पहले आता है, पाठ को निम्नानुसार समझा जा सकता है: "मेरे दास कालिब ... मैं उसको उस देश में जिसमें वह हो आया है पहुँचाऊँगा, और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा, चाहे क्यों न अमालेकी और कनानी लोग उस घाटी में रहते हों।"[9]

"लाल सागर के मार्ग से" "अकाबा की खाड़ी की दिशा" को संदर्भित करता है। "मार्ग" के लिए शब्द (דֶּרֶךְ, *देरेक)* को "सड़क" के रूप में भी समझा जा सकता है।[10]

आयत 26. अपने निर्णय की दूसरी किस्त में, परमेश्वर ने पहले कहा था उस पर उसने विस्तार से **मूसा और हारून** दोनों से **बात की**। पाठ दो बार देश के विनाश होने के बारे में बताता है। पहले परमेश्वर ने कालिब को बचाने की बात की (14:24), परन्तु फिर उसने कहा कि "यपुन्ने के पुत्र कालिब और नून के पुत्र यहोशू" दोनों को बचाया जाएगा (14:30)। इससे उस दृष्टिकोण का पता चलता है कि इस अनुच्छेद को दो अलग-अलग स्रोतों से लिया गया है।[11]

इसलिए, यदि हम ध्यान दें कि पहला संदेश मूसा से कहा गया था, और दूसरा मूसा और हारून से, और फिर मूसा ने परमेश्वर का संदेश लोगों के सामने दोहराया (14:39), हम ऐसी स्थिति की कल्पना कर सकते हैं जिसमें परमेश्वर ने तम्बू में मूसा से बात की थी और उसके बाद हारून (सम्भवतः परमेश्वर के निमंत्रण पर) का मूसा के साथ आ जाने पर अपने संदेश पर विस्तार से बात की। बाद में, मूसा (और हारून) ने परमेश्वर का संदेश लोगों को सुनाया। इसके अलावा, यह सम्भावना है कि कालिब को विशेष ध्यान और विशेष आशीष प्राप्त हुई क्योंकि भेदिए के वापस लौटने पर वह परमेश्वर की ओर से बोलने वाला पहला व्यक्ति था (या दो विश्वासयोग्य भेदियों में मुख्य प्रवक्ता था)। बाद में यहोशू को मूसा के उत्तराधिकारी के नाम से परमेश्वर ने आशीष दी। इसके अलावा, चूंकि प्राचीन साहित्य में बार-बार दोहराया जाता है, इसलिए यह मानना उचित है कि यह एक संयुक्त पाठ है जो एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है।

आयत 27. परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड मिलने के कारण को विस्तार से

बताया। लोगों का उस **पर बुड़बुड़ाते रहने** के कारण उनका विनाश कर दिया जाएगा।

आयतें 28-30. इस बिंदु पर, परमेश्वर ने इस्राएल के दण्ड की प्रकृति पर विस्तार से बताया। उसने मूसा के माध्यम से कहा, **"मेरे जीवन की शपथ जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही हैं, नि:सन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करूँगा। तुम्हारे शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे।"** "मेरे जीवन की शपथ" एक शपथ सूत्र है, जिसे आयत 21 से दोहराया जा रहा है। निश्चित रूप से जैसे यहोवा विद्यमान है, उसके वचन सत्य हैं। इस्राएलियों ने कहा था कि परमेश्वर उन्हें मारने के लिए जंगल में ले आया था; इसलिए, वे जंगल में मर गए। वे सब जो **बीस वर्ष के या उससे अधिक आयु के** जितने गिने गए थे, और **जो** [यहोवा] **पर बुड़बुड़ाते थे** मर गए।

कालिब और **यहोशू को छोड़** कोई भी उस **देश में** न जाने पाएगा, जिसे देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अपने लोगों से की थी। शब्द **शपथ खाई** के बदले, इब्रानी पाठ में इसका शाब्दिक अर्थ है "अपना हाथ उठाया।" यह शारीरिक मुद्रा शपथ ग्रहण करने के लिए बनाई गई है। एक अन्य संस्करण वाक्यांश के अनुवाद में दोनों विचारों को शामिल करता है: "मैंने हाथ उठाकर शपथ खाई" (देखें भजन 106:24-27)।

आयतें 31, 32. यद्यपि लोगों ने शिकायत की थी कि उनके **बाल-बच्चे इसी जंगल में** इस **लूट में चले जाएँगे**, वही बाल-बच्चे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने पाएँगे, जबकि माता-पिता स्वयं वहीं मर जाएँगे।

आयत 33. अन्त में, परमेश्वर ने इस्राएल के दण्ड में शामिल की गई समय अवधि के बारे में विस्तार से बताया। उनके बाल-बच्चे **चालीस वर्ष तक चरवाही** करते हुए जीवन बिताएँगे, और उनके बाप-दादों के **व्यभिचार का फल भोगते हुए** जंगल में ही भटकते रहेंगे। अन्य संस्करण "व्यभिचार" शब्द को "अविश्वास," "विश्वासहीनता," "वेश्यागमन," "विश्वासघात" और "अशोभनीय काम" के रूप में अनुवाद करते हैं। जबकि युवा पीढ़ी को मृत्यु दण्ड की आज्ञा नहीं थी, परन्तु उन्होंने चालीस वर्षों तक जंगल की कठिनाइयों का अनुभव किया। जो शायद यह दर्शाता है कि इसमें परमेश्वर का क्या अर्थ था जब उसने कहा कि वह "पितरों के पापों को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक" (14:18) देखता है।

आयत 34. बारह पुरुष **चालीस दिनों** तक **उस देश का भेद लेते रहे**, उनकी गिनती के अनुसार, दिन पीछे एक वर्ष, अर्थात् चालीस वर्ष तक इस्राएल [उनके] **अधर्म का दण्ड उठाए** रहेगा। **चालीस वर्ष** एक अनुमान है; वास्तविक समय जो सीनै से मोआब के मैदानी इलाकों में जंगल में बिताया गया, वह अड़तीस वर्ष (व्यव. 2:14) का था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि परमेश्वर ने निर्गमन के पहले दो वर्ष बाद इसे शामिल करने की अनुमति दी थी।

आयत 35. परमेश्वर ने सारांश के साथ अपने लोगों के अगुवों के आगे अपना संदेश समाप्त किया। उसने कहा, **"मैं यहोवा यह कह चुका हूँ।"** जब परमेश्वर ने कहा है, तो उसका शब्द निश्चित है! **बुरी मण्डली के लोग जो** परमेश्वर के **विरुद्ध**

इकट्ठे हुए हैं जंगल में ही **मर मिटेंगे**। परमेश्वर का उन्हें मृत्यु का दण्ड देना पूरी पीढ़ी के लिये लागू होता था।

आयतें 36-38. परमेश्वर के पास बारह भेदियों के लिये एक संदेश था, जिसे शब्दों में नहीं, बल्कि करके दिखाना था। उसने दस भेदियों को **मारने** के लिये एक विपत्ति को भेजा, उन्होंने उस **देश की नामधराई** की थी और इसलिये **मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिये उभारा था**, परन्तु उसने **यहोशू** और **कालिब** को जीवित छोड़ दिया। इस तरह, उसने लोगों को पाप के परिणाम और धार्मिकता के पुरस्कारों का प्रदर्शन किया। दस भेदियों की मौत ने एक पूर्वावलोकन प्रदान किया कि अन्ततः उनके पाप के कारण उनकी पूरी पीढ़ी के साथ क्या होगा।

लोगों की प्रतिक्रिया और हार (14:39-45)

39तब मूसा ने ये बातें सब इस्राएलियों को कह सुनाईं और वे बहुत विलाप करने लगे। 40वे सबेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे कि हम ने पाप किया है; परन्तु अब तैयार हैं, और उस स्थान को जाएँगे जिसके विषय यहोवा ने वचन दिया था। 41तब मूसा ने कहा, "तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो? यह सफल न होगा। 42यहोवा तुम्हारे मध्य में नहीं है, मत चढ़ो, नहीं तो शत्रुओं से हार जाओगे। 43वहाँ तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, इसलिये तुम तलवार से मारे जाओगे; तुम यहोवा को छोड़कर फिर गए हो, इसलिये वह तुम्हारे संग नहीं रहेगा।" 44परन्तु वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे। 45तब अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे, उन पर चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए।

आयतें 39, 40. मूसा ने परमेश्वर के शब्दों को **इस्राएलियों** से जोड़ा, जिसके परिणामस्वरूप **वे बहुत विलाप करने लगे**। अगली सुबह **वे सबेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे कि हम ने पाप किया है; परन्तु अब तैयार हैं, और उस स्थान को जाएँगे जिसके विषय यहोवा ने वचन दिया था।** यह सराहनीय था कि उन्होंने अपने पाप को पहचाना और खेद व्यक्त किया। इसलिये, उन्होंने अच्छी तरह से सोचा कि, यदि वे अपने पाप को मान लेते हैं और उस काम को करते हैं जिसे करने से उन्होंने इनकार कर दिया, तो उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा और मृत्यु के दण्ड को उनपर से हटा दिया जाएगा। उन्होंने तर्क दिया होगा, "हमने आक्रमण करने के लिये तैयार होने में परमेश्वर पर विश्वास की कमी दिखाई है; यदि हम अब आक्रमण करते हैं, तो हम उसके ऊपर अपने विश्वास को प्रदर्शित करेंगे, और वह हमें क्षमा करेगा और हमारे प्रयासों को आशीष देगा।" उन्होंने गलती की थी।

आयतें 41-43. वे जो कुछ भी कर रहे थे, उसके विरुद्ध चेतावनी देते हुए मूसा ने कहा कि वे **परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन** कर रहे थे और यह **सफल** न होगा।

वे "[परमेश्वर की] आज्ञा का उल्लंघन" कर रहे थे जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें पहले ही कहा था "कल तुम घूमकर प्रस्थान करो, और जंगल में जाओ" (14:25)। उसने उनसे आग्रह किया कि वे युद्ध में न जाएँ। उसने कहा, यदि वे ऐसा करते हैं, तो **शत्रुओं से हार** जाते क्योंकि **यहोवा** [उनके] **मध्य में नहीं** था। **अमालेकी और कनानी लोग** उन्हें मार डालते, क्योंकि वे **यहोवा को छोड़कर फिर** गए थे और वह उनके संग नहीं था (देखें 14:23)।

आयत 44. लोगों ने मूसा की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। **वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए**, जबकि **यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे**। "ढिठाई" (עָפַל, *अपल)* के अलावा अन्य अनुवाद "उन्होंने चोटी पर चढ़ने का साहस किया," "वे निडर होकर चले गए," "वे बिना विचारे चले गए" और "इस्राएलियों ने मूसा की बात नहीं मानी।" एक अन्य अनुवाद का कहना है, "फिर भी वे आगे बढ़ गए।" शब्द "उल्लंघन" के बाद एक फूटनोट दिया गया है जिसमें कहा गया है कि इब्रानी में इसका अर्थ अनिश्चित है। क्योंकि न तो सन्दूक जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था, और न ही मूसा, जो परमेश्वर का ठहराया अगुवा था, सेना के साथ आगे बढ़ रहा था, यह स्पष्ट था कि परमेश्वर इस अवसर पर इस्राएल के साथ नहीं था। वे आप ही देश पर चढ़ाई करने का प्रयास कर रहे थे।

आयत 45. इस्राएल का परमेश्वर को छोड़ने का परिणाम सेना की बहुत बड़ी हार थी! **अमालेकी और कनानी** इस्राएलियों पर **चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए**। "होर्मा" का अर्थ है "विनाश करने के लिये बने।" यह वही नगर है जहाँ इस्राएली लगभग 40 वर्षों बाद कनानियों पर विजयी हुए थे (21:1-3; देखें यहोशू 12:14; न्यायियों 1:16, 17)। इस बात से स्पष्ट है: कि परमेश्वर के लोग उसकी सहायता के बिना कुछ भी पूरा नहीं कर सकते हैं।

अनुप्रयोग

यहोवा पर विश्वास न करने का इस्राएल का घोर पाप (अध्याय 13; 14)

आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आप कभी कहीं जा रहे हों और आपने गलत मोड़ ले लिया हो, जिसके परिणामस्वरूप जहां आप जा रहे थे वहां पहुंचने में आपको अधिक समय लग गया हो? हाल ही में, मेरी पत्नी और मुझे इस बात का अनुभव हुआ। हम एक ऐसी महिला से मिलने गए जो टेक्सास के एक छोटे शहर के नौ मील दक्षिण में सड़क के किनारे पर रहती है जहाँ मैं प्रचार करता हूँ। उस शहर से लौटते समय रास्ते पर हमने एक गलत मोड़ ले लिया। हमने ध्यान नहीं दिया कि हम गलत रास्ते पर चल रहे थे और तब उस समय तक हम लगभग पंद्रह मील आगे निकल चुके थे। कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, और जब तक हम एक परिचित राजमार्ग पर नहीं आ गए हम बस चलते जा रहे थे। अन्ततः जब हम घर पहुँचे, तो हम उस नौ मील को तय करने के बजाए 40 मील की दूरी की यात्रा करके लौटे थे! कोई भी कह सकता है कि घर पहुँचने के लिये हमने एक

लंबा रास्ता तय किया!

सीनै छोड़ने के बाद इस्राएल ने कुछ ऐसा ही किया, चालीस दिन की यात्रा के लिये चालीस वर्ष लग गए। वे मिस्र से बाहर निकल आए थे और सीनै में एक वर्ष से अधिक समय बिताया था। गिनती के पहले दस अध्याय बताते हैं कि वे सीनै छोड़ने के लिये कैसे तैयार हुए और फिर वे अपनी आगे की यात्रा पर कैसे निकल पड़े। 11 और 12 अध्यायों के अनुसार सीनै पर वे लम्बे समय तक रुके; परन्तु अध्याय 12 के अन्त में, वे पारान के जंगल में पहुँच चुके थे (12:16), जो कनान के इतने निकट था कि वे उस देश में भेदिए भेज सकते थे।

विश्वास न करने का इस्राएल का घोर पाप। अध्याय 13 और 14 में बारह भेदियों की कहानी आज अनाज्ञाकारिता और बलवा के विरोध में हमारे लिये एक चेतावनी के रूप में कार्य करती है। परमेश्वर के दण्ड से बचने के लिये, हमें ऐसे पापों में नहीं गिरना चाहिए। हम इस्राएल के नकारात्मक उदाहरण से सीख सकते हैं।

1. भेदियों के कार्य और संदेश क्या थे? जब इस्राएल प्रतिज्ञा के देश के निकट पहुँचा, फिर यहोवा ने मूसा को पुरुषों को भेजने की आज्ञा दी "ताकि वे कनान देश का भेद ला सकें" (13:1, 2)। तब मूसा ने "यहोवा की आज्ञा पर" बारह पुरुषों को चुना, जो इस्राएल के बारह पितरों के प्रति गोत्र के एक-एक प्रधान पुरुष (13:3-16) थे। उसने उन्हें दक्षिण देश होकर और फिर पहाड़ी देश में जाने के निर्देश दिए (13:18-20)।

उन्हें उस देश की समृद्धि और इसके निवासियों के बलवान होने के बारे में भेद लेना था। भेदियों को दिए गए निर्देशों में से दो प्रश्नों का पालन करना था: क्या देश को अपना किया जा सकता था? और उसे जीतना कितना कठिन होगा?

भेदियों ने पूरे देश की लंबाई और चौड़ाई में यात्रा की। एक जगह में वे "एक डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ ली, और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे अनारों और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले आए" (13:21-24)।

चालीस दिन के बाद (13:25) वे लौट आए और "मूसा और हारून और सारी मण्डली के पास पहुँचे और संदेशा दिया और उस देश के फल उनको दिखाए" (13:26)। उन्होंने कहा,

> जिस देश में तू ने हम को भेजा था उसमें हम गए; उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है। परन्तु उस देश के निवासी बलवान हैं, और उसके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हम ने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा। दक्षिण देश में अमालेकी बसे हुए हैं; और पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी, और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी बसे हुए हैं (13:27-29)।

वे क्या कह रहे थे? वह देश वास्तव में फलवन्त था; वह अपना करने योग्य था। जबकि, उस देश के निवासी बलवान और अनगिनत थे, जो उसके क्षेत्र के हर

हिस्से में रहते थे। उनके नगर गढ़वाले थे। दूसरे शब्दों में, उस देश को जीतना कठिन होगा।

भेदियों में से कालिब इस बात से असहमत था। गिनती 13:30 बताता है, “पर कालिब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने के विचार से कहा, ‘हम अभी चढ़ के उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निःसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है।’”

पर जो पुरुष (यहोशू को छोड़कर) उसके संग गए थे उन्होंने कहा, “उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान हैं” (13:31)। फिर आगे लिखा है,

> और उन्होंने इस्राएलियों के सामने उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, “वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हम ने उसमें देखे वे सब के सब बड़े डील-डौल के हैं। फिर हम ने वहाँ नपीलों को, अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे” (13:32, 33)।

कालिब (यहोशू को शामिल करते) और अन्य भेदियों के बीच मतभेद या तो देश के समृद्धि या शत्रुओं के बल से सम्बन्धित नहीं था। इसे इस्राएलियों की यहोवा की सहायता से देश पर विजय प्राप्त करने की योग्यता के साथ करना था। कालिब ने कहा, “हम में ऐसा करने की शक्ति है” (13:30); दूसरों ने कहा, “उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है” (13:31)।

2. भेदियों के बुरे सन्देश पर लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी? दुर्भाग्यवश, उन्होंने बहुमत वाले सन्देश पर विश्वास किया। बाइबल कहती है,

> तब सारी मण्डली चिल्ला उठी; और रात भर वे लोग रोते ही रहे। और सब इस्राएली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगे; और सारी मण्डली उनसे कहने लगी, “भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते! या इस जंगल ही में मर जाते! यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? हमारी स्त्रियाँ और बाल-बच्चे तो लूट में चले जाएँगे; क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ?” फिर वे आपस में कहने लगे, “आओ, हम किसी को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को लौट चलें” (14:2-4)।

भेदियों के सन्देश पर लोगों की प्रतिक्रिया सुनने पर, “मूसा और हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली के सामने मुँह के बल गिरे” (14:5)। और यहोशू और कालिब “अपने अपने वस्त्र फाड़कर,” इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे,

> जिस देश का भेद लेने को हम इधर उधर घूम कर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है। यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाकर उसे हमें दे देगा। केवल इतना करो कि तुम

यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो; और न उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो (14:7-9)।

इन शब्दों में हम पाते हैं कि क्यों यहोशू और कालिब ने कहा, “हम में ऐसा करने की शक्ति है,” अन्य भेदियों ने इसके विपरीत कहा, “हम में ऐसा करने की शक्ति नहीं हैं।” दोनों विश्वासयोग्य भेदियों के पास युद्ध को जीतने की इस्राएल की क्षमता का उच्च अनुमान नहीं था। अन्य दस भेदियों की तुलना में उनके पास अधिक योद्धा या बेहतर हथियार होने की उपलब्धता नहीं थी। इसके बदले, उन दो भेदियों के पास परमेश्वर पर अधिक विश्वास था। उन्होंने कहा, “यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाकर उसे हमें दे देगा” (14:8)! अन्य भेदियों - और लोगों ने - अपने मूल्यांकन के आधार पर पूरी तरह से परमेश्वर को छोड़ दिया।।

लोगों ने यहोशू और कालिब के शब्दों पर कैसे प्रतिक्रिया जताई? “तब सारी मण्डली चिल्ला उठी कि इन पर पथराव करो” (14:10)! मनाने से इनकार करने का परिणाम उनका अपना विनाश था।

3. परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी? जब लोगों ने दस भेदियों के बुरे संदेश (13:32) पर विश्वास किया और यहोशू और कालिब की विनती को ठुकरा दिया, तो परमेश्वर उन्हें सहन नहीं कर पाया। “तब यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू में सब इस्राएलियों पर प्रकाशमान हुआ” (14:10)। और यहोवा ने मूसा से कहा, “वे लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे? मैं उन्हें मरी से मारूँगा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूँगा, और तुझ से एक जाति उत्पन्न करूँगा जो उनसे बड़ी और बलवन्त होगी” (14:11, 12)।

मूसा ने देश को दो तरीकों से खत्म करने के परमेश्वर के खतरे का उत्तर दिया: (अ) उसके साथ तर्क करके। उसने तर्क दिया कि क्या परमेश्वर ने लोगों को उस देश में नहीं पहुँचाया जिसकी प्रतिज्ञा उसने की थी - क्योंकि इस्राएली उसके लोग थे और हर कोई इसे जानता था - अन्यजाति राष्ट्र इस प्रकार विचार करेंगे कि वह ऐसा करने में असमर्थ था, उसने कहा, “कि यहोवा उन लोगों को उस देश में जिसे उसने उन्हें देने की शपथ खाई थी पहुँचा *न सका*, इस कारण उसने उन्हें जंगल में घात कर डाला है” (14:16; वर्णन दिया गया है)। (ब) उसे आग्रह करके। उसने परमेश्वर से विनती की कि अपने तरस खानेवाले स्वभाव के आधार पर, “अब इन लोगों के अधर्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे” (14:19)।

मूसा प्रेरक था। परमेश्वर ने उसकी विनती सुनी और कहा, “तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूँ” (14:20)। इस बात का एक बड़ा उदाहरण यह है कि “धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है” (याकूब 5:16)!

परमेश्वर के लोगों की क्षमा में कौन सी बात छिपी थी? यह बात उन्हें अपराध

से मुक्त नहीं करता है या उन्हें दण्ड से मुक्त नहीं करता है। इसके बदले, उसने परमेश्वर के खतरे को कि वह पूरी तरह से इस्राएलियों को नष्ट कर देगा, हटा दिया। वह उन्हें दण्डित करेगा, परन्तु वह उन्हें त्याग नहीं देगा। अन्ततः परमेश्वर अपने लोगों को प्रतिज्ञा के देश में पहुँचाएगा।

यह घोषणा करने के बाद कि उसने उससे बलवा करनेवाले लोगों को क्षमा कर दिया था, परमेश्वर ने उनके दण्ड की घोषणा की। क्योंकि लोगों ने उन्हें देश देने की परमेश्वर की शक्ति पर संदेह किया क्योंकि उसने उन्हें वचन दिया था, परमेश्वर ने उन्हें “बुरी मण्डली” (14:27, 35) कहा था। उसने कहा कि उन्होंने उस देश को तुच्छ जाना था (14:31) और उन पर “बुड़बुड़ाने” और “अविश्वास” (14:27, 29, 33) का आरोप लगाया। उसने कहा कि वे उसके विरुद्ध इकट्ठे हुए थे (14:35)। इसलिये, यहोवा ने इस्राएलियों को यहोशू और कालिब को छोड़कर यह आज्ञा देकर दण्डित किया कि चालीस वर्ष तक वे जंगल में भटकते रहेंगे, जब तक कि वे सब वहाँ मर न जाएँ। उनके बाल-बच्चे, जिनके बारे में उन्होंने चिन्ता व्यक्त की थी (14:3) उस देश में प्रवेश करेंगे। इसके अलावा, दस भेदिए, “नामधराई करनेवाले पुरुष यहोवा के मारने से उसके सामने मर गये” (14:36, 37)।

परमेश्वर ने अपने लोगों पर इस तरह के भयानक दण्ड की घोषणा की क्योंकि दो बातें थीं जो उनके पाप को और भी घृणित कर रही थी: (अ) उनके अविश्वास का उनके पास कोई बहाना नहीं था। उन्होंने परमेश्वर की महिमा और उन सब चिह्नों को देखा था जो उसने मिस्र देश में और जंगल में किए थे (14:22)। इस्राएलियों को यह मालूम होना चाहिए था कि वह एक ऐसा परमेश्वर है जो इस तरह के आश्चर्य कर्म कर सकता है आसानी से उन्हें वह देश दे सकता है जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की थी। (ब) वे अकसर पाप करते रहते थे। परमेश्वर ने कहा कि उन्होंने “मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानीं” (14:22ब)। वे एक के बाद एक पाप करते चले गए - यह घटना पापों की पूरी श्रृंखला की चरम सीमा थी - और अन्ततः परमेश्वर का धैर्य उनके साथ खो चुका था। परमेश्वर धीरज धरता है (जैसा कि 2 पतरस 3:9 कहता है), परन्तु उसके लोग बहुत आगे चले गए थे, जहाँ से लौटने की कोई सम्भावना नहीं थी। सिवाय दण्ड के उनके लिये कुछ भी नहीं बचा था!

4. परमेश्वर के आदेश के लिये लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी? जब लोगों ने परमेश्वर के आदेश को सुना कि वे जंगल में ही नाश हो जाएँगे, तो वे पहले “बहुत विलाप करने लगे” (14:39)। तब उन्होंने निर्णय किया कि वे देश को अपना करने के साथ आगे बढ़ते हुए विश्वास की अपनी पहले की कमी को पूरा करेंगे। जो भी वे सोच रहे थे, उन्होंने कहा, “हम ने पाप किया है; परन्तु अब तैयार हैं, और उस स्थान को जाएँगे जिसके विषय यहोवा ने वचन दिया था” (14:40)।

मूसा ने लोगों को ऐसी बात करने के विरोध में चेतावनी दी, उन्हें यह बताकर कि ऐसा करके वे “यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे थे।” उन्होंने उनसे कहा कि वे सफल नहीं होंगे, परन्तु उनके शत्रुओं के आगे मारे जाएँगे क्योंकि परमेश्वर

उनके संग नहीं रहेगा (14:41-43)। मूसा के शब्दों के अनुसार, हम पढ़ते हैं,

> परन्तु वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे। तब अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे, उन पर चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए (14:44, 45)।

स्पष्ट है, परमेश्वर इस्राएल से चाहता था कि वे सीखें - और हमसे भी चाहता है कि सीखे - कि उसके लोग अपने आप से शत्रुओं को हरा नहीं सकते। जैसे इस्राएल को परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता थी, आज मसीहियों को भी उसकी सहायता की आवश्यकता है! परमेश्वर के संग, सब कुछ सम्भव है (इफि. 3:20; फिलि. 4:13)। परमेश्वर के बिना, हमें जीत की कोई आशा नहीं है।

विश्वास न करने का आज का पाप। इस्राएल के पाप और उस पाप का परमेश्वर का दण्ड से, हम विश्वास की आवश्यकता को देख सकते हैं। इस्राएल असफल रहा क्योंकि लोगों ने अपने वचन को पूरा करने के लिये परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया था। हमें भी परमेश्वर पर और सब कुछ करने की उसकी सामर्थ्य पर विश्वास करना चाहिए जिसे उसने पूरा करने का वचन दिया है। क्या यीशु ने जगत के अन्त तक सदा हमारे संग रहने का वचन दिया है (मत्ती 28:20)? इसका अर्थ है कि वह रहेगा! क्या परमेश्वर ने हमें कभी न छोड़ने या हमें न त्यागने का वचन दिया है (इब्रा. 13:5)? तो वह उस वचन को पूरा करेगा! क्या हमें स्वर्ग राज्य का वचन दिया गया है (यूहन्ना 14:1-3)? तब हम किसी दिन स्वर्ग में होंगे! आइए हम परमेश्वर पर भरोसा करें कि उसने जो वचन दिया है उसे वह पूरा करता है।

इसके अलावा, इस्राएल की कहानी दर्शाती है कि परमेश्वर के लोगों का गिरना सम्भव है। नए नियम के दो लेखकों ने इस घटना के बारे में मसीहियों को गिरने के विरोध में चेतावनी दी है। 1 कुरिन्थियों 10:1-11 में, पौलुस ने उन इस्राएली लोगों का उल्लेख किया जिन्हें मिस्र से छुड़ाया गया था और परमेश्वर ने आशीष दी थी परन्तु फिर भी जंगल में वे पाप में गिर गए। उसने इन बातों को मसीहियों को उसी तरह के पाप करने के विरुद्ध चेतावनी देने के लिये एक उदाहरण के रूप में प्रयोग किया है। उसने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला, इसलिये जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," "वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े" (1 कुरि. 10:12)। इब्रानियों के लेखक ने अध्याय 3 और 4 में, कुछ ऐसा ही कहा है। उसने इस्राएलियों को गिरने के विरुद्ध चेतावनी देने के लिये जंगल में गिर गए इस्राएलियों के उदाहरण का प्रयोग किया (विशेष रूप से देखें इब्रा. 3:16-19; 4:11)। इस्राएल के पतन के नए नियम के उपयोग से प्रमाणित होता है कि मसीहियों के लिये अनुग्रह से गिरना और नाश हो जाना सम्भव है।

कितने इस्राएली प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश कर चुके थे? मिस्र छोड़ने वाले गिनती किए गए 6,00,000 पुरुषों में से केवल दो - यहोशू और कालिब - कनान में प्रवेश किए। 6,00,000 में से केवल दो! यह "कुछ विश्वासयोग्य" अभिव्यक्ति के लिये नया अर्थ देता है। हमारी मण्डलियों में कितने मसीही अन्ततः हमारे "प्रतिज्ञा किए

गए देश" स्वर्ग में प्रवेश करेंगे? आइए हम एक दूसरे को प्रोत्साहित करें ताकि, यदि सम्भव हो, तो हम में से कोई भी जीवते परमेश्वर से दूर हटा न लिए जाएँ (इब्रा. 3:12)।

परमेश्वर के संग खड़े रहने का महत्व (14:22-24)

इस्राएल में धर्मी लोगों की संख्या हमेशा कम हुआ करती थी: मूसा और हारून, यहोशू और कालेब, लेवियों की। जब परमेश्वर ने उन्हें अपनी जगह लेने का नेतृत्व किया, तो लोगों को उनके साथ खड़े होने के लिये बुलाया गया। केवल कुछ ही लोग ऐसे कार्य के लिये चुने गए थे।

यह एक सिद्धान्त है जो हमारे जीवन का हिस्सा होना चाहिए। हम बहुमत का हिस्सा नहीं हो सकते हैं। परमेश्वर धार्मिकता का मानक है। संख्या से कोई फर्क नहीं पड़ता; धर्मी होने से पड़ता है। सच तो सच ही रहेगा चाहे कोई विश्वास करता है नहीं करता या उसे मानता है या नहीं। परमेश्वर इस्राएल के प्रति अपने वचन के प्रति सच्चा बना रहा, भले ही वे कभी उस देश में नहीं गए। उनके अविश्वास ने परमेश्वर के वचन और उसकी सच्चाई को खत्म नहीं किया। जब हम माता-पिता के रूप में कठिन निर्णय लेते हैं, तो हम मान सकते हैं कि हम अकेले खड़े हैं। परन्तु, यदि पहली बार निर्णय लेना सही था, तो यह सही रहता है - चाहे उसकी कभी सराहना की जाए या नहीं। जब भी किसी मंडली के अगुवे सही निर्णय लेते हैं, तो उन्हें खड़े होने की हिम्मत की आवश्यकता होती है। हमें उसके वचन की धार्मिकता में परमेश्वर के साथ खड़ा होना चाहिए, भले ही यह कठिन हो।

जब हम परमेश्वर के नहीं कहने पर विचार करते हैं तो अनन्त उद्धार के लिये एक आवेदन किया जाना चाहिए। पिता के साथ सही रिश्ते में प्रवेश करने के बारे में यीशु ने कहा, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6)। यदि यीशु के बिना "कोई भी" पिता के पास नहीं पहुँच सकता है, तो सुसमाचार का पालन किए बिना कितने बचाए जाएँगे? कोई नहीं। कुछ लोग दण्ड को तर्कसंगत रूप से ऐसे समय के रूप में देखते हैं जब उन्हें अपनी आत्मिक अवस्था के बारे में परमेश्वर के दिमाग को बदलने का अवसर मिलता है। यह वह नहीं है जो न्याय के बारे में बाइबल कहती है। परमेश्वर की योजना व्यक्ति के जीवन में पाई जानी है। एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया जाएगा (इब्रा. 9:27)।

सकारात्मक ओर, परमेश्वर का अर्थ यह भी है जब वह हाँ कहता है। वह अपने वचनों को पूरा करता है और विशेष रूप से उद्धार के सम्बन्ध में अपने समझौतों को पूरा करता है। आइए हम उसकी इच्छा के अनुसार चले और उसके साथ खड़े रहें। GMT

इस्राएल के घोर पाप का दण्ड (14:22-35)

देश को अपना करने से इनकार करने के पाप को परमेश्वर ने इतनी गंभीरता

से दण्डित क्यों किया? पाप सचमुच में भयानक था। अध्याय उनके पापों को प्रबल शब्दों में कहता है: यहोवा के विरुद्ध बलवा करना (14:9), तिरस्कार करते रहना (14:11), विश्वास न करना (14:11), अधर्म (14:19), बुड़बुड़ाना (14:27, 29, 36), और उस देश को तुच्छ जाना जिसे देने का वचन उसने दिया (14:31) था।

इसलिये, जब उन्होंने ऊपर जाने से इनकार कर दिया तो विशिष्ट पाप के परिमाण ही प्रश्न के उत्तर का हिस्सा है। निर्गमन 32 में सुनहरे बछड़े की उपासना करने में इस्राएल का पाप कम से कम इस पाप के रूप में जघन्य प्रतीत होता है, फिर भी परमेश्वर ने इसके कारण पीढ़ी को नष्ट नहीं किया। इस विशेष पाप के साथ परमेश्वर ने इतनी गंभीरता से क्यों व्यवहार किया है, इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यह अपराधों की पूरी श्रृंखला में अन्तिम पाप था (14:22, 23)। अपने पापों की पुनरावृत्ति प्रकृति के कारण, इस्राएल के अपराध को “अविश्वास” (14:33) के रूप में कहा जाता है, और लोगों को “बुरी मण्डली” कहा जाता है जो परमेश्वर के “विरुद्ध इकट्ठे हुए” (14:35; देखें 14:27)।

इस्राएल के धर्म त्याग और इसके परिणामों को समझने की कुंजी यह जानना है कि इस्राएल के पास उनके विश्वासहीनता के लिये कोई बहाना नहीं था और उन्होंने *बार-बार* पाप किया। इस्राएल के अविश्वास की कहानी सिखाती है कि परमेश्वर धीरज और क्षमा करनेवाला है परन्तु अन्त में अपना क्रोध दिखाता है! जब लोगों को उसे जानने का विशेषाधिकार प्राप्त होता है वे ही उसके विरोध में निरन्तर पाप करते रहते हैं, जिससे दण्ड का मिलना अनिवार्य होता है। निरन्तर अपराध करनेवाला परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करने की अपेक्षा कर सकता है!

परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा (14:22, 23, 28-35)

संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे बड़े अपराध के दोषी कैदी के मृत्यु दण्ड के सम्बन्ध में एक कहावत है। जब दोषी व्यक्ति को उसके कक्ष से गलियारे से होते हुए मौत की पंक्ति द्वारा उस स्थान पर ले जाया जाता है, जहाँ उसे मार डाला जाता है - शायद घातक इंजेक्शन द्वारा - तो उसके आगे आगे चलने वाला पहरेदार चिल्लाते हुए कहता है, “मृत व्यक्ति चल रहा है!” संदेश यह है कि कैदी को मृत्युदण्ड दिया जाता है, जो एक मृत के समान ही होता है। वह एक “मरा हुआ व्यक्ति होता है जो चल रहा है।”

इस्राएलियों की पीढ़ी के बारे में भी यही कहा जा सकता है जिन्होंने दस भेदियों के बुरे सन्देश को स्वीकार करते समय परमेश्वर को तुच्छ जाना। परमेश्वर का उन पर दण्ड सुनाए जाने के बाद, वे “चलने वाले मृत व्यक्ति थे।” उनका मरना निश्चित होता था।

आज भी कुछ लोगों पर यही विचार लागू होता है। उन्हें शारीरिक रूप से मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता है। बल्कि, वे आत्मिक रूप से मर चुके होते हैं। वे “मृत व्यक्ति जो चलते हैं।” जब तक वे पश्चाताप नहीं करते, वे निश्चित रूप से दण्ड के भागी होते हैं और अनन्त काल की मृत्यु में चले जाते हैं। आइए हम इन लोगों को सिखाएँ और उन्हें बचाएँ जिन्हें उद्धार के लिये परमेश्वर की ओर फिरने की

आवश्यकता है।

समाप्ति नोट

[1]कैथरीन डूब सकेनफेल्ड, *जर्नीयिंग विथ गॉड: अ कॉमेन्टरी ऑन द बुक ऑफ गिनती,* इंटरनेशनल थिओलोजिकल कॉमेन्टरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1995), 89. [2]टी. कार्सन, "गिनती," इन *द न्यू लेमेन्'स बाइबल कॉमेन्टरी इन वन वॉल्युम,* एड. जी. सी. डी. हाउली, एफ. एफ. ब्रूस, एण्ड एच. एल. एलिसन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 1979), 257. इस प्रतीकात्मक कार्य के अन्य उदाहरणों के लिए, देखें उत्पत्ति 17:3, 17; लैव्य. 9:24; गिनती 16:4, 22, 45; 20:6; यहोशू 5:14; 7:6. [3]उपरोक्त. देखें; भजन 121:5, 6; यशा. 30:2, 3; 32:2; योना 4:6. [4]सकेनफेल्ड, 87. [5]बारुख ए. लेविन, *गिनती 1-20,* दि एंकर बाइबल, वॉल्यूम 4 (न्यूयॉर्क: डबलडेय, 1993), 380. [6]सकेनफेल्ड, 90-91. [7]जॉर्ज बुकानन ग्रे, *गिनती,* दि इंटरनेशनल क्रिटिकल कॉमेन्टरी (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनेर्स संस्करण, 1903),158. इसी तरह के मुहावरे के समान उपयोग के लिए, देखें उत्पत्ति 31:7, 41 नहेम्य. 4:12; अय्यूब 19:3. [8]कालेब और उसके वंशजों और उनके देश पर उनके अधिकार लेने के बारे में, देखें यहोशू 14:6-14; न्यायियों 1:10-15. [9]ए. नोर्टसिज, *गिनती,* ट्रान्स. एड वेन डर मास, बाइबल स्टूडेन्ट्स कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1983), 127. [10]योहानन अहरोनी एण्ड माइकल एवी-योनाह, *द मैकमिलन बाइबल एटलस,* 3र्ड एड. (न्यूयॉर्क: मैकमिलन पब्लिशिंग कं., 1993), 17 (नं. 10).

[11]उन स्रोतों की चर्चा जिनका उपयोग अध्याय 13 और 14 में किया गया है और इन अध्यायों के लिए इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करने के कारण दिए गए हैं उसे गॉर्डन जे. वेनहम, *गिनती,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 124-26 में दिया गया है।